हिंदी आत्मकथा के विविध आयाम

प्रधान संपादक

डॉ. विद्यावती जी. राजपूत

संपादक

प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार

Scanned by CamScanner

हिंदी आत्मकथा के विविध आयाम

(Collective Essays Presented at International Seminar on 'Aatmakatha')

- प्रधान संपादक - डॉ. विद्यावती जी. राजपूत
संपादक - प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार

• प्रकाशक:
विझक्राफ्ट पब्लिकेशन्स ॲन्ड डिस्ट्रीब्युशन प्रा. लिमिटेड,
१२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर- ४१३००१
भ्रमणध्वनी - ०९६३७३३५५५१, ०९६६५९५००९७
ई-मेल - wizcraftpublication@gmail.com

• मुद्रक:
पालवी प्रिंटर्स,
१२९/४९८, वसंत विहार, मुरारजी पेठ, जुना पुणे नाका, सोलापूर-४१३००१

• वर्ष : २०१६

• ISBN: ९७८-९३-८६०१३-१४-९

• रुपये: ३५०/-

सभी हक सुरक्षित (इस पुस्तक में प्रकाशित संशोधित लेख एवं सभी विचारों से संपादक मंडल सहमत होंगे ही ऐसा नहीं।)

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित आलेख, विभिन्न विचार, आदि लेखक के हैं। अत: संपादक, संपादक मंडल, मुद्रक तथा प्रकाशक इन विचारों से सहमत होंगे ही ऐसा नहीं।

Scanned by CamScanner

४२. अन्या से अनन्या में प्रभा का अस्मिताबोध १८२
- *डॉ. बी. एल. गुंडूर, प्रभावती श. शाखापुरे*

४३. दलित आत्मकथाओं में सामाजिक एवं शैक्षिक संघर्ष १८५
- *डॉ. एल. पी. लमाणी*

४४. डॉ. प्रभा खेतान की आत्मकथा अन्या से अनन्या में स्त्री-संघर्ष १९१
- *अनिता उगरगोल*

४५. हिंदी आत्मकथा में परिवारीक संघर्ष १९५
- *डॉ. आर के मेत्राणी*

४६. डॉ. अब्दुल कलाम जी का जीवन संघर्ष १९८
- *डॉ. महांतेश. आर. अंची*

४७. गांधीजी की आत्मकथा में सामाजिक संघर्ष २०१
- *डॉ. अनीता एम. बेलगांकर*

४८. धोखा, दर्द और समानंतर दुनिया की बात एक कहानी यह भी के साथ २०३
- *डॉ. ओगलता शाक्य कलबुरगी*

४९. आत्मकथा में दलित संघर्ष २०९
- *डॉ. अमृत एल. बाळुवाले*

५०. भारतीय दलित स्त्री की रचनात्मक चेतना में आत्मकथा का महत्व २१२
- *डॉ. दयानंद शास्त्री*

५१. दोहरा अभिशाप में नारी संघर्ष २१६
- *डॉ. मिनाक्षी बी. पाटील*

५२. हिंदी आत्मकथा में दलित एवं नारी संघर्ष की गाथा २२१
- *बिष्णुलाल कुमाल (प्रजापति)*

५३. आत्मकथा : मन्नू भंडारी की कलम से २३०
- *डा. मधु भारद्वाज*

५४. आत्मकथा का विभिन्न लेखकों द्वारा विवेचन २३४
- *डॉ. चंचल शर्मा*

५५. सत्य के प्रयोग : नील का दाग २३९
- *डॉ. रमेश कुमार स्वामी*

५६. हिंदी आत्मकथा में नारी संघर्ष के विविध आयाम २४३
- *डॉ. के. श्याम सुन्दर*

Scanned by CamScanner

दोहरा अभिशाप में नारी संघर्ष

डॉ. मिनाक्षी बी. पाटील, बसवेश्वर कला और वाणिज्य महाविद्यालय, बागेवाडी

व्यक्ति का जन्म उसके वंश की बात नहीं है। उसके पैदा होते ही [illegible] और धर्म उससे जुड जाते हैं। इनसे उसकी मुक्ति नहीं है। ऐसी स्थिति में [illegible] अगर स्त्री हो तो उसकी मुक्ति की बात करना और भी कठिन हो जाता है। [illegible] स्त्री दलित परिवार में जन्म लेती है तो उसकी स्थिति कैसे रहेगी यह अंदाजा [illegible] लगाया जा सकता। कहा जाता है कि समाज में एक सामान्य स्त्री को जीवन [illegible] भी बदतर होता है और अगर वह स्त्री दलित हो तो उसकी दशा क्या हो सकती है [illegible]

कौसल्या बैसंत्री भी एक ऐसी ही दलित स्त्री है। जिन्होंने शोषण [illegible] को झेला है। "एक दलित स्त्री को दोहरे अभिशाप से गुजरना पड़ता है एक [illegible] होना और दूसरा उसका दलित होना"१ कौसल्या बैसंत्री की लिखी आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में इसका साफ चित्र मिलता है। कौसल्या बैसंत्री की [illegible] आत्मकथा हिंदी दलित साहित्य की पहली महिला आत्मकथा मानी जाती है। [illegible] लेखिका आत्मकथा की भूमिका में लिखती हैं, 'मातृभाषा मराठी होते हुए हिंदी [illegible] लिखने का प्रयोजन क्यों ? क्योंकि हिंदी में दलित महिलाओं के आत्मकथा [illegible] का अभाव है जिसकी शुरुआत में मैं भी हिस्सा होना चाहती हूँ।२ वैसे तो आत्मकथा [illegible] अनुभवों का दस्तावेज है। जिसमें संघर्षशील जीवन में भोगा गया यथार्थ, [illegible] तिरस्कार आदि वेदना का अंकन मिलता है। वैसे भी दलित वेदना दलित साहित्य [illegible] जन्म दाती है और आत्मकथा में लेखिका अपने जीवन की एक-एक पन्नों को [illegible] रखती है। इस संदर्भ में लेखिका उल्लेख करती है कि "अस्पृश्य समाज में पैदा होने [illegible]

[illegible] जो मानसिक यातनाएँ सहन करनी पडी इसका मेरे संवेदनशील [illegible] मैंने अपने अनुभव खुले मन से लिखे हैं।"३

[illegible] सदैव से संघर्षशील समाज का अविभाज्य अंग रहा है। [illegible] आधुनिक काल तक दलित दशा पर दृष्टि डालें तो अनेक परिवर्तनों के [illegible] मूल संघर्ष आज भी यथावत है। "इस आत्मकथा की रचनाकार के [illegible] भारतीय समाज, दलित समुदाय, छात्र आंदोलन (दलित), राजनीतिक [illegible] अंबेडकर की विचारधारा, महिला आंदोलन व निजी पारिवारिक परिवेश में [illegible] विद्रुपताएँ व अंतर्विरोध रहे हैं, जिनसे जूझते, संघर्ष करते उसको आगे बढते [illegible] बहुत धैर्य और मानवीयता से काम लेना पडा।"४

लेखिका ने अपने परिवार के समुदाय के अनुभव, स्त्रियों की कठिनाई, [illegible] और संघर्ष का हू-ब-हू चित्र प्रस्तुत किया है।

लेखिका ने आत्मकथा के प्रथम प्रकरण के प्रथम पंक्ति में यह बताने का प्रयास किया है कि दलित महिलाएँ पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं। [illegible] अपने माता-पिता के संदर्भ में लिखती हैं, "मेरे माँ-बाबा (पिता) [illegible] एमप्रेस मिल में काम करते थे। माँ धागा बनाने वाले विभाग में काम करती [illegible] और पिताजी मशीनों में तेल डालने का काम करते थे।"५ यहाँ एक ओर दलित [illegible] की प्रगतिशील विचारधारा को अभिव्यक्त करता है तो दूसरी ओर दलित स्त्रियों की श्रमशीलता को। दलित समुदाय में पुनर्विवाह का प्रावधान भी था। लेखिका ने अपनी आजी के जीवन का वृतांत बयान करते हुए 'पाट' का उल्लेख किया है, जो उसके आजी के साथ किया गया था। "अस्पृश्य समाज में अगर कोई विधवा दुबारा शादी करना चाहे तो उसके लिए कोई रोक टोक तो थी ही नहीं। तलाकशुदा औरत को भी दूसरा घर करने में समाज को कोई आपत्ति नहीं थी परंतु इस दूसरी शादी की विधि अलग थी और इसे विवाह न कहकर 'पाट' कहते हैं।६ लेखिका ने दलित स्त्री का स्वाभिमान तथा आत्मसम्मान का परिचय भी दिया है। आजी के पति मोडकू आजी पर रोज हाथ उठाता है तो वह पक्का निर्णय करती है कि वह अब इस घर में नहीं रहेगी, भाईयों के पास भी न जाएगी। वह अपने बच्चों को लेकर बिन बताए घर से निकलती है और नागपुर आती हैं, जहाँ वह मेहनत करके अपने पाँवो पर खडी रहकर अपने बच्चों का पालन पोषण करती है।

आत्मकथा में उल्लेख मिलता है कि दलित समाज केवल अपने पेट की चिंता करता है न कि अपने या अपने समाज की अभिवृध्दि का। "संपूर्ण दलित समाज

Scanned by CamScanner

अज्ञान, अशिक्षा के गर्त में पड़ा था। अपने अधिकार अपनी परिस्थिति के ... ज्यादा नहीं सोचता था। वह उसे अपने पेट की ही चिंता रहती थी कि ... जलेगा"।७ यह दलित समाज की सदियों की चिंता थी। यह सब दलितों के ... तथा अशिक्षा के कारण ही हो रहा था।

दलित समाज की कुछ स्त्रियों को ज्ञात हो गया था कि दलितों का ... शिक्षा के कारण ही संभव होगा। इसलिए जाईबाई चौधरी नाम की एक ... लडकियों के लिए स्कूल खोलती है और शिक्षा के महत्व का प्रचार करती ... अस्पृश्यों की बस्तियों में भी जाकर उन्हें अपनी लडकियों को स्कूल में भेजने के ... कहती थीं। उन्हें शिक्षा के महत्व के बारे में बताती थीं। वे हमारे घर भी आई थीं ... हमें स्कूल भेजने के लिए कहा। माँ ने मुझे और मेरी बड़ी बहन को उनके स्कूल ... भेजना शुरु किया।"८ यहाँ से लेखिका का ज्ञानार्जन का कार्य आरंभ होता है जो ... तक दिखाई देता है।

लेखिका को बचपन से ही सामाजिक तथा मानसिक वेदना का सामना करना पडा। जब वे मिडे कन्याशाला में प्रवेश करती हैं तो वहाँ का वातावरण बिलकुल अलग था। वहाँ ब्राह्मणों की लडकियाँ अधिक थीं। वे साफ सुथरे कीमती कपडे पहन कर आती थीं। कानों में सोने की बालियाँ पहनती थीं। उनके पास अच्छा बस्ता रहता था, पीतल का टिफिन बाक्स था, जिसमें स्वादिष्ट व्यंजन होते थे। इससे लेखिका में हीन भावना उत्पन्न होने लगी। वे लिखती हैं, "मैं लडकियों के सामने अपना डिब्बा नहीं खोलती थी। मुझे अपने घटिया डिब्बे और घटिया रोटी को उनके सामने खोलने में शर्म आती थी। मैं दीवार की ओर मुँह करके खाना खाती थी ताकि कोई देख न ले।"९ लेखिका को अस्पृश्य होने का खेद था वे लिखती है, "मैं अस्पृश्य हूँ, इसका मुझे बहुत दुःख होता था और मैं हीनता महसूस करती थी। कोई मुझे मेरी जाति न पूछ बैठे इसका मुझे सदैव डर रहता था। इसलिए मैं अकेली चुपचाप खाने की छुट्टी में या शुरु होने के पहले एक ओर बैठी रहती थी।"१०

लेखिका के परिवार पर अंबेडकर के विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। लेखिका के माता-पिता ने कई दिक्कतों के बावजूद उनकी पढाई में कोई बाधा आने नहीं दिया। कारण अंबेडकर का भाषण उन्होनें बाबा साहब अंबेडकर का कस्तूर चंद प्रार्क में भाषण सुना था, "अपनी प्रगति करना है तो शिक्षा प्राप्त करना बहुत जरुरी है। लडका और लडकी दोनों को पढना चाहिए।"११ माँ के मन पर इसका गहरा असर हुआ और हम सब पढने लगें। बाबा साहेब अंबेडकर के जनजागृति से सभी अस्पृश्य

... के नाम पर जो मानसिक यातनाएँ सहन करनी पडी इसका मेरे संवेदनशील ... पडा। मैंने अपने अनुभव खुले मन से लिखे हैं।"३

दलित वर्ग सदैव से संघर्षशील समाज का अविभाज्य अंग रहा है। ... काल से आधुनिक काल तक दलित दशा पर दृष्टि डालें तो अनेक परिवर्तनों के ... उनका मूल संघर्ष आज भी यथावत है। "इस आत्मकथा की रचनाकार के ... और भारतीय समाज, दलित समुदाय, छात्र आंदोलन (दलित), राजनीतिक सक्रियता, अंबेडकर की विचारधारा, महिला आंदोलन व निजी पारिवारिक परिवेश में बाधाएँ, विद्रुपताएँ व अंतर्विरोध रहे हैं, जिनसे जूझते, संघर्ष करते उसको आगे बढते हुए उसे बहुत धैर्य और मानवीयता से काम लेना पडा।"४

लेखिका ने अपने परिवार के समुदाय के अनुभव, स्त्रियों की कठिनाई, यातनाएँ और संघर्ष का हू-ब-हू चित्र प्रस्तुत किया है।

लेखिका ने आत्मकथा के प्रथम प्रकरण के प्रथम पंक्ति में यह बताने का प्रयास किया है कि दलित महिलाएँ पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं। मजदूरी करती हैं। अपने माता-पिता के संदर्भ में लिखती हैं, "मेरे माँ-बाबा (पिता) नागपुर की एमप्रेस मिल में काम करते थे। माँ धागा बनाने वाले विभाग में काम करती थीं और पिताजी मशीनों में तेल डालने का काम करते थे।"५ यहाँ एक ओर दलित समुदाय की प्रगतिशील विचारधारा को अभिव्यक्त करता है तो दूसरी ओर दलित स्त्रियों की श्रमशीलता को। दलित समुदाय में पुनर्विवाह का प्रावधान भी था। लेखिका ने अपनी आजी के जीवन का वृतांत बयान करते हुए 'पाट' का उल्लेख किया है, जो उसके आजी के साथ किया गया था। "अस्पृश्य समाज में अगर कोई विधवा दुबारा शादी करना चाहे तो उसके लिए कोई रोक टोक तो थी ही नहीं। तलाकशुदा औरत को भी दूसरा घर करने में समाज को कोई आपत्ति नहीं थी परंतु इस दूसरी शादी की विधि अलग थी और इसे विवाह न कहकर 'पाट' कहते हैं।६ लेखिका ने दलित स्त्री का स्वाभिमान तथा आत्मसम्मान का परिचय भी दिया है। आजी के पति मोडकू आजी पर रोज हाथ उठाता है तो वह पक्का निर्णय करती है कि वह अब इस घर में नहीं रहेगी, भाईयों के पास भी न जाएगी। वह अपने बच्चों को लेकर बिन बताए घर से निकलती है और नागपुर आती हैं, जहाँ वह मेहनत करके अपने पाँवों पर खडी रहकर अपने बच्चों का पालन पोषण करती है।

आत्मकथा में उल्लेख मिलता है कि दलित समाज केवल अपने पेट की चिंता करता है न कि अपने या अपने समाज की अभिवृध्दि का। "संपूर्ण दलित समाज

Scanned by CamScanner

अज्ञान, अशिक्षा के गर्त में पडा था। अपने अधिकार अपनी परिस्थिति के ... ज्यादा नही सोचता था। वह उसे अपने पेट की ही चिंता रहती थी कि कल ... जलेगा"।७ यह दलित समाज की संदियों की चिंता थी। यह सब दलितों की ... तथा अशिक्षा के कारण ही हो रहा था।

दलित समाज की कुछ स्त्रियों को ज्ञात हो गया था कि दलितों का उद्धार ... शिक्षा के कारण ही संभव होगा। इसलिए जाई बाई चौधरी नाम की एक अछूत ... लडकियों के लिए स्कूल खोलती है और शिक्षा के महत्व का प्रसार करती है। ... अस्पृश्यों की बस्तियों में भी जाकर उन्हें अपनी लडकियों को स्कूल में भेजने के ... कहती थीं। उन्हें शिक्षा के महत्व के बारे में बताती थीं। वे हमारे घर भी आई थीं और ... हमें स्कूल भेजने के लिए कहा। माँ ने मुझे और मेरी बडी बहन को उनके स्कूल ... भेजना शुरु किया।"८ यहाँ से लेखिका का ज्ञानार्जन का कार्य आरंभ होता है जो ... तक दिखाई देता है।

लेखिका को बचपन से ही सामाजिक तथा मानसिक वेदना को सहन ... पडा। जब वे भिडे कन्याशाला में प्रवेश करती हैं तो वहाँ का वातावरण बिलकुल अलग ... था। वहाँ ब्राह्मणों की लडकियाँ अधिक थीं। वे साफ सुथरे कीमती कपडे पहन कर ... आती थीं। कानों में सोने की बालियाँ पहनती थीं। उनके पास अच्छा बस्ता रहता था। ... पीतल का टिफिन बाक्स था, जिसमें स्वादिष्ट व्यंजन होते थे। इससे लेखिका में हीन ... भावना उत्पन्न होने लगी। वे लिखती हैं, "मैं लडकियों के सामने अपना डिब्बा नहीं ... खोलती थी। मुझे अपने घटिया डिब्बे और घटिया रोटी को उनके सामने खोलने में ... शर्म आती थी। मैं दीवार की ओर मुँह करके खाना खाती थी ताकि कोई देख न ले।" ... लेखिका को अस्पृश्य होने का खेद था वे लिखती है, "मैं अस्पृश्य हूँ, इसका मुझे बहुत ... दुःख होता था और मैं हीनता महसूस करती थी। कोई मुझे मेरी जाति न पूछ बैठे ... इसका मुझे सदैव डर रहता था। इसलिए मैं अकेली चुपचाप खाने की छुट्टी में या शुरु ... होने के पहले एक ओर बैठी रहती थी।"१०

लेखिका के परिवार पर अंबेडकर के विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। लेखिका के माता-पिता ने कई दिक्कतों के बावजूद उनकी पढाई में कोई बाधा आने नहीं दिया। कारण अंबेडकर का भाषण उन्होंने बाबा साहब अंबेडकर का कस्तूर चंद प्रार्क में भाषण सुना था, "अपनी प्रगति करना है तो शिक्षा ... लडका और लडकी दोनों को पढना ... हुआ और हम सब ...

... प्रभावित थे। वे कहते थे, "अस्पृश्य समाज को जागृत करने के लिए मेरी दस सभाओं ... का काम एक जलसा कर सकता है जन जागृति।"१२ लेखिका भी अंबेडकर के विचारों से प्रभावित होती गई और अस्पृश्य विद्यार्थी परिषद की कार्यकारी परिषद के लिए कार्य करने लगी।

लेखिका के जीवन का दूसरा अध्याय उसके विवाह के उपरांत शुरु होता है। लेखिका ने देवेंद्र कुमार से विवाह किया, जो बिहार का रहनेवाला था। शादी के पहले देवेंद्र कुमार बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से डी. लिट्. रहा था। लेबर इंस्पेक्टर की नौकरी मिली तो रिसर्च छोड दिया। पोस्ट भारत सरकार की थी और राजपत्रित थी। निरसा को पोस्टिंग हुई। पर वहाँ जाने से पहले ही हमारी जाति वहाँ पहुँच गई थी। जिससे वहाँ का चपरासी भी छुआछूत करने लगा। इस संदर्भ में लेखिका लिखती है, "हम दलित समाज के हैं, यह वह जान गया था। बहुत छुआछूत मानने वाला था। छोटी जाति वाला साहब है इसलिए न वह हमारे घर का काम करेगा न हमारा छुआ खाना खाएगा, पर डटा रहेगा हमारे घर।"१३

आत्मकथा की भूमिका में लेखिका लिखती हैं कि पुरुष प्रधान समाज औरतों का खुलापन बरदाश्त नहीं करता।१४ और उनके जीवन में भी यही हुआ आत्मकथा में लिखती हैं, "मेरी और देवेंद्र कुमार की नहीं बनी। देवेंद्र कुमार सिर्फ अपने ही घेरे में रहने वाला आदमी है। गर्म मिजाज और जिद्दी। अपने मुँह से कहता है कि मैं बहुत शैतान आदमी हूँ। उसने मेरी इच्छा भावना खुशी की कभी कद्र नहीं की। बात-बात पर गाली वह भी गंदी-गंदी और हाथ उठाना। मारता भी था बहुत क्रूर तरीके से।"१५ यहाँ लेखिका सुशिक्षित होने पर भी इन प्रताडनाओं को सहती रही। वह केवल खाना बनाने तथा उसकी शारीरिक भूख मिटाने के लिए चाहिए थी। लेखिका ने देवेंद्र कुमार से तलाक लेने का निर्णय लिया और अपने छोटे बेटे के साथ मद्रास में रहने लगी। वह अपने समाज के लिए कार्य करने की इच्छा रचाती है।

आत्मकथा के अंत में लिखती हैं, "अगर हम स्वाभिमान से उन्नति करना चाहते हैं, तब हमें अपने पाँव पर खडा होकर अपने पर भरोसा रखकर, आगे बढना होगा। हमें अंदर शक्ति पैदा करनी होगी। किसी का सहारा लेकर चलने से काम नहीं बनेगा।"१६ आत्मकथा में पितृसत्ता के शिकंजे में जकडी स्त्री की छटपटाहट, ... की आकांक्षाओं को रेखांकित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ -

१. Googleweblight.com, जातिव्यवस्था विरोधी है दलित साहित्य
२. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ०८
३. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ०८
४. हिंदी दलित आत्मकथाएँ, डॉ. आरिफ महात, पृ. सं. ६३
५. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ११
६. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. १७
७. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. २८
८. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ३७
९. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ४१
१०. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ४१
११. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ४७
१२. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ६७
१३. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. १०३
१४. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. ०८
१५. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. १०४
१६. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, पृ. सं. १२४

Scanned by CamScanner